

→ मॉनसून पूर्व की वर्षा / Pre-Monsoon ✓

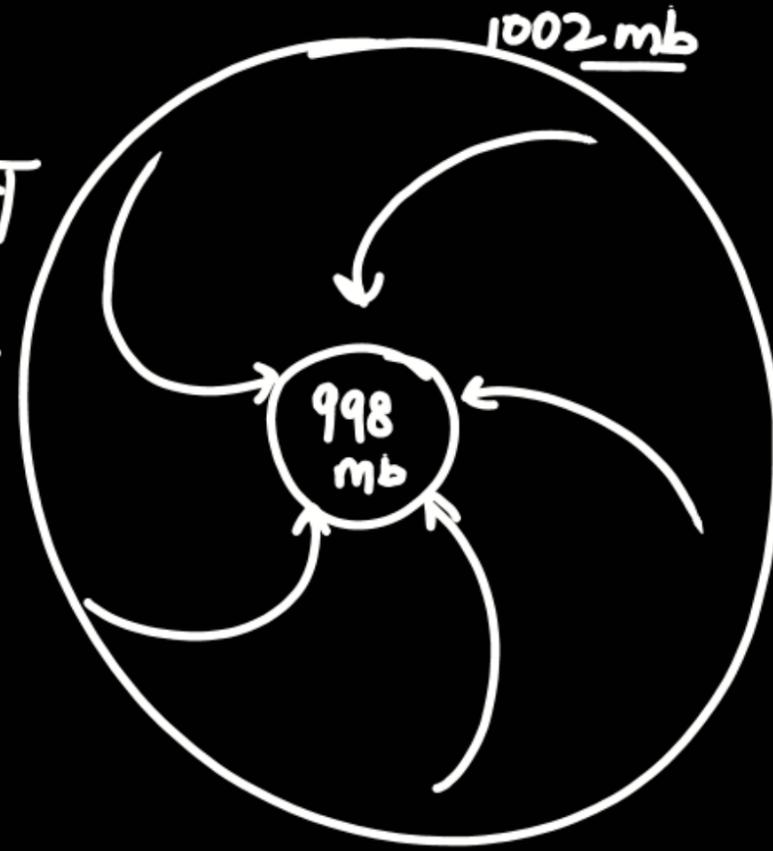
ग्रीष्म ऋतु :- लू (Loo) :-

बवंडर :- धूलभरे चक्रवात

→ स्थानीय तापान्तर के कारण निर्माण

राजस्थान में ममूल्या

आंधियाँ :- जब बवंडर नमी वाली पवनों से मिलते हैं, तो यह काफी विकराल रूप धारण कर लेते हैं जिन्हे आंधी कहा जाता है।



भारत में सर्वाधिक आंधियाँ राजस्थान में आती हैं।

⇒ आंधियों के साथ हल्की बूझ-बाँड़ी भी होती है।



वर्षा ऋतु (Rainy Season) :- मध्य जून से मध्य सितम्बर

→ मानसून का आगमन :- मॉनसून (Monsoon)

↓
सर्वप्रथम विश्व में
मानसून की व्याख्या
हिप्पोक्रेस तथा
भारतीय मॉनसून की
व्याख्या अल-मसूदी ने
की है।

→ अरबी भाषा का शब्द - अर्थ होता है - पवनों का
च्युत्क्रमण

→ एक सामयिक पवन (Periodic wind)

→ प्रत्येक 6 माह में अपने मार्ग में परिवर्तन करती है।

↓
6 माह स्थल से सागर व 6 माह सागर से स्थल



मानसून एक जटिल मौसमी तंत्र है ✓

मानसून की उत्पत्ति के सिद्धांत

Monex

तापीय सिद्धांत
(Thermal Theory)

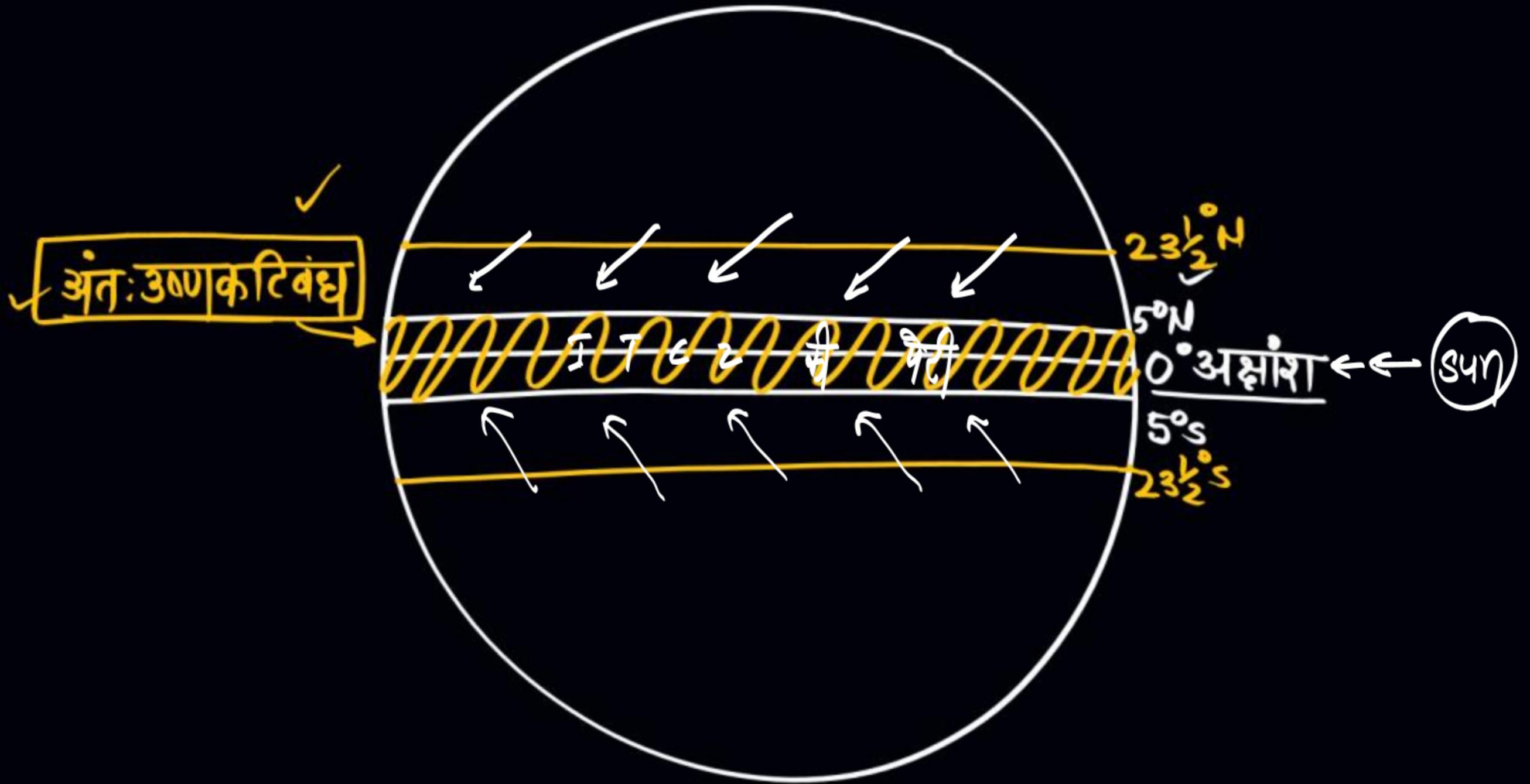
एडमंड हेली

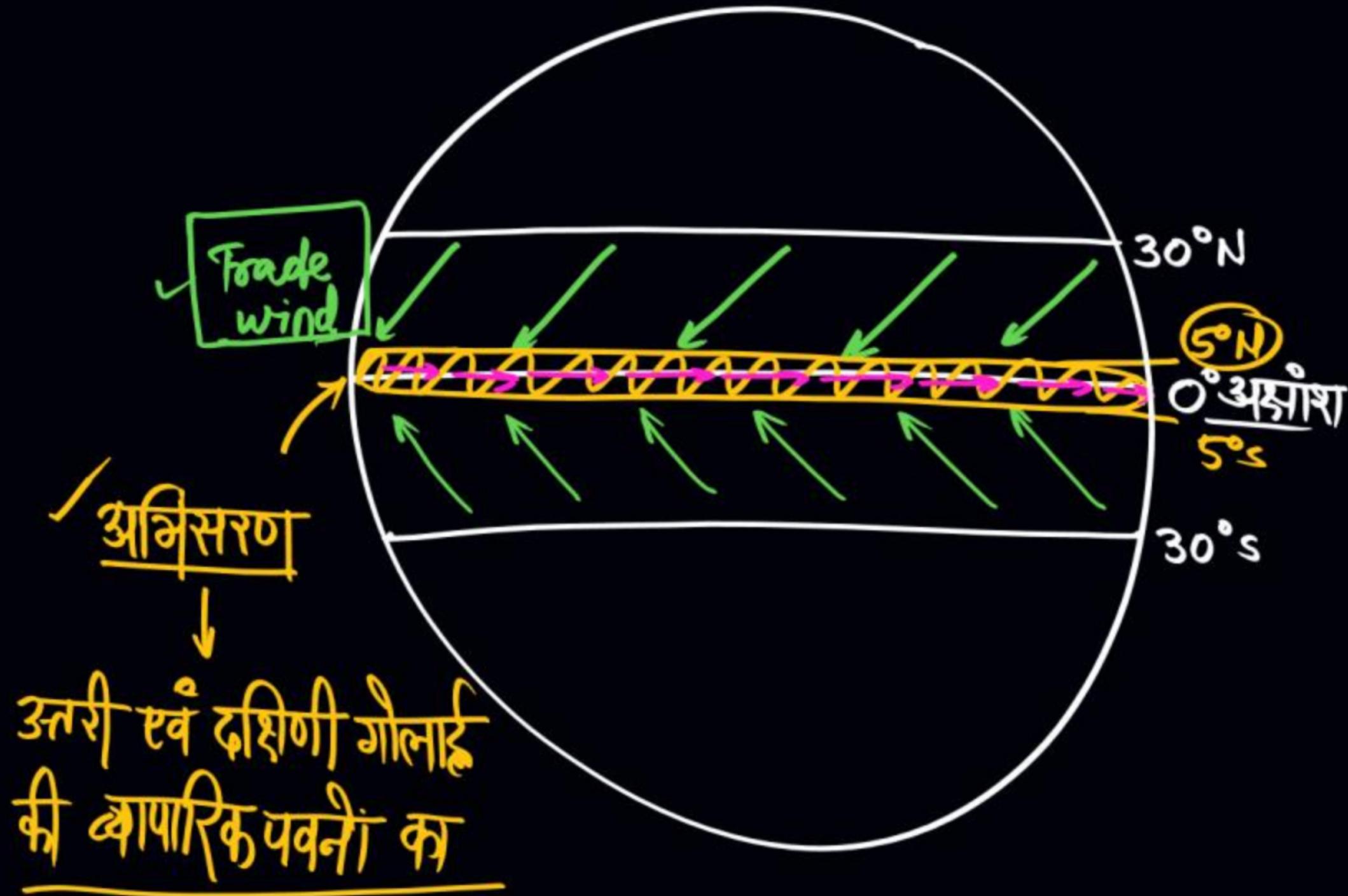
गतिक/गत्यात्मक सिद्धांत
(Dynamic Theory)

फ्लोने महोदय द्वारा

पूर्वी जेट स्ट्रीम सिद्धांत
(Easterly Jet stream theory)

पी. कोटेश्वरम्



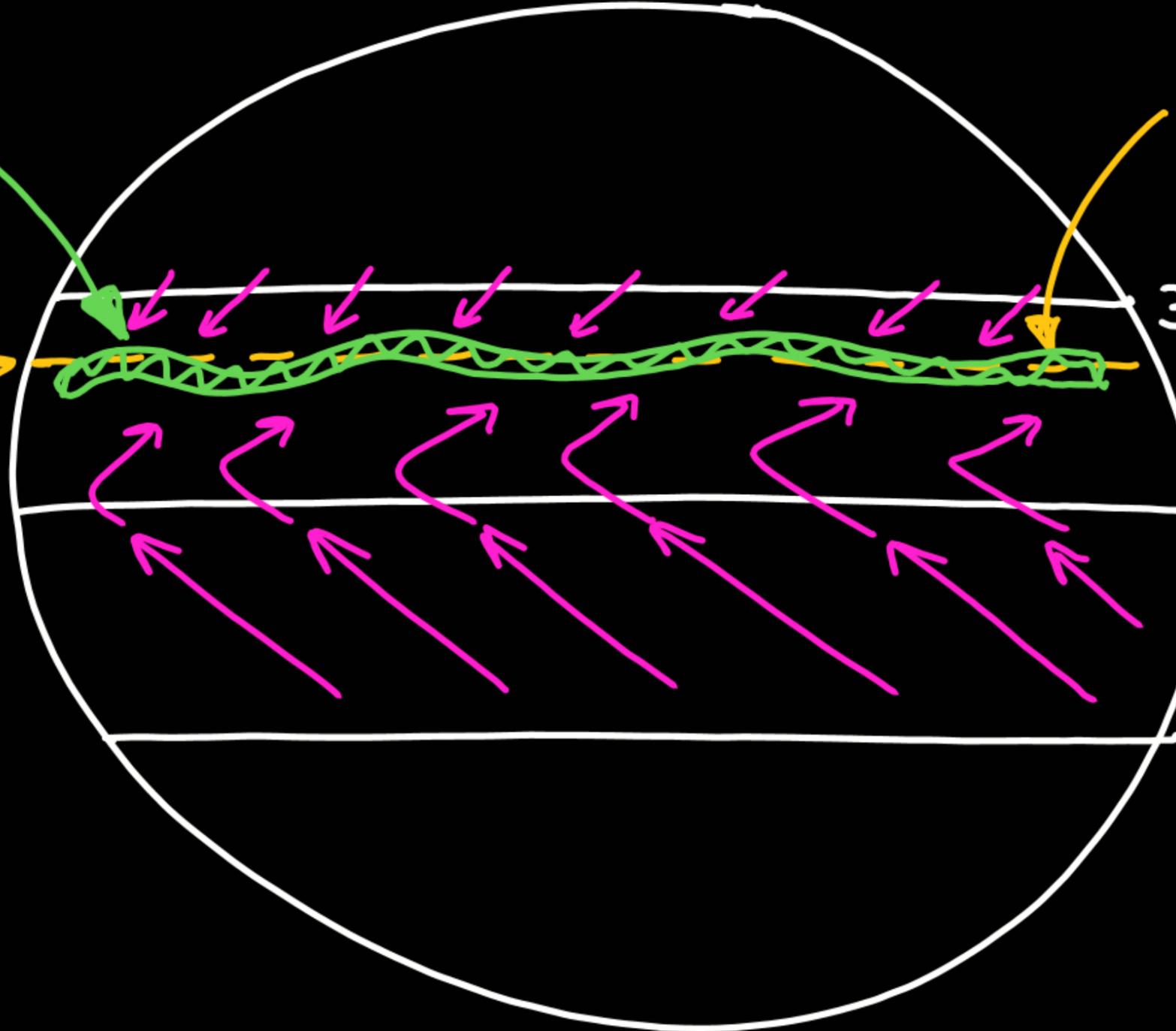


ITCZ की पैंटी (Belt)
↓
जहाँ सूर्य लंबवत् होता है,
वहीं नीचे ITCZ की पैंटी
का विकास होता है

पृथ्वी का ग्लोबल सिस्टम

ITCZ की पैटी

SUN



$23\frac{1}{2}^{\circ} N$ / कर्क रेखा

$30^{\circ} N$ अक्षांश

0° अक्षांश

$30^{\circ} S$ अक्षांश

✓ भारत में मानसून आगमन ?

↳ जब सूर्य 21 जून को कर्क रेखा पर लंबवत् होता है तो ITCZ की पैरी हिमालय के दक्षिण की ओर स्थापित हो जाती है तथा दक्षिणी गोलार्ध की व्यापारिक पवनें विषुवत रेखा को पार कर उत्तरी गोलार्ध में प्रवेश करती हैं जिनकी दिशा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर होती है इन्हीं पवनों के साथ भारत में मानसून का आगमन हो जाता है।

Note :- कोरियोलिस बल के प्रभाव से दक्षिणी गोलार्ध की व्यापारिक पवनें उत्तरी गोलार्ध में फेरण के नियमानुसार दाएं ओर विक्षेपित हो जाती हैं।

